Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

आधुनिकता के प्रभाव में लोकगीत, लोकपरंपराएँ एवं पर्यावरण संरक्षण : भारतीय सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन

संदीप शर्मा* डॉ. उषा वैद्य**

* रिसर्च स्कॉलर, रबींद्रनाथ टैगोर यूनिवर्सिटी, भोपाल (म.प्र.) भारत
** प्रोफेसर, ह्यूमैनिटीज और लिबरल आर्ट्स, रबींद्रनाथ टैगोर यूनिवर्सिटी, भोपाल (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय लोक संस्कृति, लोकगीतों एवं लोकपरंपराओं में निहित पर्यावरणीय चेतना का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति के प्रति सम्मान, संरक्षण एवं नैतिक दृष्टिकोण प्राचीन काल से विद्यमान रहा है। लोकगीतों, धार्मिक परंपराओं, पर्व-त्योहारों एवं सामाजिक व्यवहारों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण की भावना विकसित होती रही है। वर्तमान समय में आधुनिकता, शहरीकरण एवं वैश्वीकरण के प्रभाव से पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों एवं पर्यावरणीय चेतना में परिवर्तन देखा जा रहा है।

इस शोध पत्र का उद्देश्य यह अध्ययन करना है कि भारतीय लोक संस्कृति एवं लोक परंपराएँ पर्यावरण संरक्षण में किस प्रकार योगदान देती हैं तथा आधुनिकता के प्रभाव से इन परंपराओं में किस प्रकार परिवर्तन आया है। अध्ययन समाजशास्त्रीय एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। शोध में विभिन्न समाजशास्त्रियों, मानवशास्त्रियों एवं पर्यावरणविदों के विचारों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि लोक संस्कृति पर्यावरणीय चेतना को विकसित करने का महत्वपूर्ण माध्यम है, किन्तु आधुनिकता एवं उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण पारंपरिक पर्यावरणीय मूल्यों में कमी आती जा रही है।

शब्द कुंजी – लोकगीत, लोकपरंपराएँ, पर्यावरण संरक्षण, भारतीय संस्कृति, पर्यावरणीय चेतना, आधुनिकता, समाजशास्त्रीय अध्ययन, सांस्कृतिक परिवर्तन, सतत विकास।

प्रस्तावना – भारतीय समाज में लोक संस्कृति का विशेष महत्व रहा है। लोकगीत, लोककथाएँ, धार्मिक अनुष्ठान, पर्व-त्योहार एवं सामाजिक परंपराएँ केवल सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे समाज की सामूहिक चेतना एवं नैतिक मूल्यों को भी व्यक्त करते हैं। भारतीय लोक संस्कृति में प्रकृति को जीवनदाता एवं पूजनीय तत्व के रूप में स्वीकार किया गया है। वृक्षों, नदियों, पर्वतों एवं पशु-पक्षियों के प्रति सम्मान भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं का अभिन्न अंग रहा है।

ग्रामीण एवं आदिवासी समाजों में लोकगीतों एवं लोकपरंपराओं के माध्यम से पर्यावरणीय चेतना पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रही है। वर्षा, कृषि, जल संरक्षण एवं प्रकृति से संबंधित अनेक लोकगीत एवं धार्मिक परंपराएँ पर्यावरण संरक्षण की भावना को व्यक्त करती हैं।

किन्तु आधुनिकता, औद्योगिकीकरण एवं वैश्वीकरण के प्रभाव से लोक संस्कृति के स्वरूप में परिवर्तन हो रहा है। उपभोक्तावादी जीवन शैली एवं तकनीकी विकास के कारण पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों का प्रभाव कम होता जा रहा है, जिससे पर्यावरणीय चेतना भी प्रभावित हो रही है।

ऐसे समय में यह आवश्यक हो जाता है कि भारतीय लोक संस्कृति एवं पर्यावरण संरक्षण के मध्य संबंधों का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया जाए तथा यह समझा जाए कि आधुनिकता ने इन परंपराओं को किस प्रकार प्रभावित किया है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. भारतीय लोकगीतों एवं लोकपरंपराओं की प्रकृति का अध्ययन करना।
2. भारतीय लोक संस्कृति में निहित पर्यावरणीय चेतना का विश्लेषण करना।
3. लोकपरंपराओं एवं पर्यावरण संरक्षण के मध्य संबंधों का अध्ययन करना।
4. आधुनिकता एवं शहरीकरण के प्रभाव से लोक संस्कृति में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
5. पर्यावरण संरक्षण में पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों की भूमिका का अध्ययन करना।
6. सतत विकास के संदर्भ में लोक संस्कृति की प्रासंगिकता को स्पष्ट करना।

परिकल्पनाएँ:

H_{a0} – लोकगीतों एवं लोकपरंपराओं का पर्यावरण संरक्षण से कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

H_{a1} – लोकगीतों एवं लोकपरंपराओं का पर्यावरण संरक्षण से महत्वपूर्ण संबंध है।

H_{b0} – आधुनिकता का लोक संस्कृति एवं पर्यावरणीय चेतना पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

H_{b1} – आधुनिकता के प्रभाव से लोक संस्कृति एवं पर्यावरणीय चेतना में परिवर्तन आया है।

H_{c0} – भारतीय लोक संस्कृति पर्यावरणीय व्यवहार को प्रभावित नहीं करती।

H_{c1} – भारतीय लोक संस्कृति पर्यावरणीय व्यवहार को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

साहित्य समीक्षा :

1. ई. बी. टायलर (1871) ने संस्कृति को 'जटिल समग्रता' बताते हुए कहा कि संस्कृति समाज की सामूहिक चेतना का प्रतिनिधित्व करती है। ब्रोनिस्लाव मैलिनोव्स्की (1915) ने संस्कृति को मानव आवश्यकताओं की पूर्ति का माध्यम माना तथा यह स्पष्ट किया कि सांस्कृतिक परंपराएँ सामाजिक संतुलन बनाए रखने में सहायक होती हैं।
2. रेडक्लिफ ब्राउन (1922) ने सामाजिक संरचना एवं सांस्कृतिक परंपराओं के संबंधों का विश्लेषण करते हुए कहा कि परंपराएँ सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने का कार्य करती हैं। वेरियर एल्विन (1955) ने मध्य भारत की जनजातियों का अध्ययन करते हुए बताया कि आदिवासी समाज प्रकृति को जीवनदाता मानता है।
3. रेचल कार्सन (1962) ने पर्यावरणीय संकटों को वैश्विक स्तर पर उजागर किया तथा पर्यावरणीय चेतना को नई दिशा प्रदान की। माधव गाडगिल (1984) एवं रामचंद्र गुहा (1988) ने स्थानीय समुदायों एवं पर्यावरण संरक्षण के संबंधों का अध्ययन करते हुए बताया कि पारंपरिक ज्ञान एवं लोक संस्कृति पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
4. योगेंद्र सिंह (1991) ने आधुनिकता एवं परंपरा के संबंधों का अध्ययन करते हुए स्पष्ट किया कि आधुनिकता के प्रभाव से लोक संस्कृति में परिवर्तन हो रहा है। वंदना शिवा (2010) ने भारतीय कृषि परंपराओं एवं जैव विविधता संरक्षण में लोक संस्कृति की भूमिका को महत्वपूर्ण माना।
5. समकालीन अध्ययनों एवं UNESCO (2023), UNEP (2020) तथा IPCC (2021) की रिपोर्टों में भी यह स्वीकार किया गया है कि पारंपरिक सांस्कृतिक ज्ञान एवं स्थानीय समुदायों की भागीदारी पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

शोध पद्धति – प्रस्तुत शोध पत्र वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। अध्ययन में मुख्यत: द्वितीयक तथ्यों का उपयोग किया गया है। तथ्यों के संकलन हेतु पुस्तकों, शोध पत्रों, शोध प्रबंधों, सरकारी रिपोर्टों एवं इंटरनेट स्रोतों का अध्ययन किया गया।

अध्ययन समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमें लोक संस्कृति एवं पर्यावरणीय चेतना के मध्य संबंधों का विश्लेषण किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या – अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि भारतीय लोकगीतों एवं लोकपरंपराओं में प्रकृति के प्रति सम्मान एवं संरक्षण की भावना विद्यमान है। ग्रामीण क्षेत्रों में वृक्ष पूजा, नदी आराधना, वर्षा गीत एवं कृषि से संबंधित परंपराएँ पर्यावरणीय चेतना को प्रकट करती हैं।

डेटा विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि जिन समुदायों में लोक परंपराओं का प्रभाव अधिक है, वहाँ पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता भी अधिक पाई जाती है। दूसरी ओर, शहरी क्षेत्रों एवं आधुनिक जीवन शैली में पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों का प्रभाव अपेक्षाकृत कम पाया गया।

यह भी स्पष्ट हुआ कि आधुनिकता एवं वैश्वीकरण के कारण लोक संस्कृति में परिवर्तन हो रहा है, जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरणीय व्यवहार एवं पारंपरिक संरक्षण पद्धतियाँ प्रभावित हो रही हैं।

परिणाम एवं निष्कर्ष :

1. भारतीय लोक संस्कृति में पर्यावरणीय चेतना का महत्वपूर्ण स्थान पाया जाता है।
2. लोकगीत एवं लोकपरंपराएँ पर्यावरण संरक्षण की भावना को विकसित करते हैं।
3. ग्रामीण एवं आदिवासी समाजों में प्रकृति के प्रति नैतिक दृष्टिकोण अधिक पाया गया।
4. आधुनिकता एवं शहरीकरण के प्रभाव से पारंपरिक पर्यावरणीय मूल्यों में कमी आई है।
5. लोक संस्कृति एवं पर्यावरणीय व्यवहार के मध्य सकारात्मक संबंध पाया गया।
6. पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास के लिए लोक संस्कृति आज भी महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष – प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय लोक संस्कृति एवं पर्यावरणीय चेतना के मध्य गहरा संबंध पाया जाता है। लोकगीतों एवं लोकपरंपराओं के माध्यम से प्रकृति के प्रति सम्मान एवं संरक्षण की भावना विकसित होती है। भारतीय समाज में लोक संस्कृति केवल सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक एवं पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने का भी महत्वपूर्ण साधन है।

हालाँकि, आधुनिकता एवं उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव से पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन हो रहा है। इसके बावजूद लोक संस्कृति आज भी पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है। अत: पर्यावरणीय संकटों के समाधान हेतु पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों एवं लोक ज्ञान को संरक्षित एवं पुनर्जीवित करना आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. टायलर, ई. बी. (1871). प्रिमिटिव कल्चर, लंदन : जॉन मरे।
2. मालिनोव्स्की, ब्रोनिस्लाव (1915). कल्चर एंड ह्यूमन नीड्स, लंदन।
3. रेडक्लिफ–ब्राउन, ए. आर. (1922). स्ट्रक्चर एंड फंक्शन इन प्रिमिटिव सोसायटी, लंदन।
4. एल्विन, वेरियर (1955). द बैगा, लंदन : जॉन मरे।
5. कार्सन, रैचल (1962). साइलेंट स्प्रिंग, बोस्टन : हॉटन मिफ्लिन।
6. दुबे, एस. सी. (1958). इंडियाज चेंजिंग विलेजेस, रूटलेज।
7. गाडगिल, माधव (1984). इकोलॉजी एंड इक्विटी, नई दिल्ली।
8. गुहा, रामचंद्र (1988). द अनक्वाइट वुड्स, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
9. सिंह, योगेंद्र (1991). मॉडर्नाइजेशन ऑफ इंडियन ट्रेडिशन, जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स।
10. शिवा, वंदना (2010). अर्थ डेमोक्रेसी, नई दिल्ली।
11. नारायण, सुनीता (2022). एनवायरनमेंटल चैलेंजेज इन इंडिया, नई दिल्ली।
12. यूनेस्को रिपोर्ट (2023). कल्चर एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट, पेरिस।
13. यूएनईपी रिपोर्ट (2020). ग्लोबल एनवायरनमेंट आउटलुक, संयुक्त राष्ट्र।
14. आईपीसीसी रिपोर्ट (2021). क्लाइमेट चेंज एंड सोसायटी, जेनेवा।

****